17

महान गलीली सेवकाई

गलील में वापसी से लेकर मण्डपों के पर्व तक

परिचय के लिए। –*क. समय व स्थान।*–इस काल में लगभग पौने दो वर्ष का समय अर्थात यीशु की सेवकाई का आधे से अधिक भाग आता है। प्रारम्भिक महीनों में वह यरूशलेम में केवल एक बार ही गया। अंतिम छह माह उसके गलील के दक्षिण और पूर्व के इलाकों में निकाले जाने को चिह्नित करते थे। इन अपवादों के साथ, गलील मसीह की सेवकाई के इस महत्वपूर्ण भाग का दृश्य और कफ़रनहूम उसका केन्द्र था।

ख. वशेष बातें।–यह (1) बहुत अधिक काम करने का समय था। इसमें इधर-उधर जाने, प्रेम और सामर्थ के आश्चर्यकर्मों, सार्वजनिक प्रवचनों और व्यक्तिगत शिक्षा के साथ कई बार देर रात तक छुट्टी मिलती थी, या प्रार्थना के लिए भोर का समय ही मिल पाता था। (2) लोगों में प्रसिद्धि का समय था। हर क्षेत्र और वर्ग के लोग उसकी बातें सुनने, उसकी ईश्वरीय सामर्थ को देखने या उसके गवाह बनने के लिए आते थे जिससे नगरों में भीड़ के कारण उसका रास्ता तक रुक जाता था और आम तौर पर उसे खुले आकाश के नीचे रहना पड़ता था। (3) ग्रन्थियों और फरीसियों, और फिर अन्त में, हेरोदेस अंतिपास के बढ़ते विरोध का समय था। (4) अंतिम महीनों में लोगों में प्रसिद्धि कम होने और बार-बार गलील से निकाले जाने का समय था।

I. पहला या तैयारी का चरण-चेलों की दूसरी बुलाहट

1. नासरत में ठुकराया जाना (लूका 4:14-30)। –गलील में एक गांव था जहां पर लग सकता है कि बालक यीशु को वहां के सब लोग जानते और उससे प्रेम करते होंगे। बपतिस्मा लेने के बाद यीशु को नासरत से गए एक वर्ष या इससे अधिक समय हो गया होगा। अब यरूशलेम की तरह, वह अपने आप को लोगों के विश्वास के लिए देने के लिए वापस आता है। मार्ग में उसने राजा के एक कर्मचारी के पुत्र को चंगा करके काना में दूसरा आश्चर्यकर्म किया (यूहन्ना 4:46-54), और अपने बचपन के गांव में जाकर शिक्षा भी दी होगी। नासरत में लगभग यरूशलेम जैसा ही फल मिला। इस *बढ़ई युवक को उन्हें* सिखाने का अधिकार किसने दिया था। उन लोगों के अंधेपन की व्याख्या करना बहुत दुखद है कि वही लोग जिनके साथ *यीशु* तीस वर्ष तक रहा था उसकी जान के प्यासे बनने वालों में सबसे आगे थे।

2. कफ़रनहूम को चुना गया (मत्ती 4:12-16)। –नासरत को छोड़ यीशु कफ़रनहूम में चला गया। गलील सागर के उत्तर-पश्चिमी तट पर घनी आबादी और व्यापार के व्यस्त

केन्द्र को गलील की महान सेवकाई के केन्द्र के रूप में चुनना सही था। ज़्योंकि लगभग दो वर्षों तक लगता है कि यीशु एक बार में वहां से कई हज़्ते तक बिल्कुल बाहर नहीं रहा। कफ़रनहूम से वह जाने की योजनाएं बनाता और यहीं लौट आता था। यदि इस पूरे काल में उसका कोई ठिकाना होगा तो वह यहीं था।

3. आश्चर्यकर्म से मछलियों का आना और चेलों की दूसरी बुलाहट (मज़ी 4:18-22; लूका 5:1-11)। -कफ़रनहूम का चयन करने के थोड़ी देर बाद ही यीशु ने दूसरी बार चेलों को पहले से अधिक महत्वपूर्ण पुकार दी। यह बुलाहट आश्चर्यकर्म से जाल में मछलियों आने के साथ हुई जिससे सब लोग बहुत ही प्रभावित हुए। पतरस और अंद्रियास, याकूब और यूहन्ना मछुआरे थे। उनमें से तीन, पांच प्रमुख चेलों में से थे (यूहन्ना 1:35-45)। यह दूसरी बुलाहट पहली से दो कारणों से अलग थी, ज़्योंकि इससे वे यीशु से पज़्के तौर पर जुड़ गए और यह बुलाहट विशेष तौर पर सेवकाई के लिए थी। चेलों अर्थात प्रचार के भावी स्रोतों के दल के और पज़्के ढंग से उसके इर्द-गिर्द इकट्ठा होना तैयारी के अग्रिम चरण को दिखाता है।

II. दूसरा चरण-प्रेरितों की नियुज़्ति तथा पहाड़ी उपदेश तक

1. कफ़रनहूम में यादगारी सज़्त (मरकुस 1:21-34)। -यीशु अपने चार चेलों के साथ कफ़रनहूम में लौटकर, तुरन्त बहुत ही व्यस्त सार्वजनिक सेवकाई में जुट गया। आराधनालय में जाकर उसने ऐसी सामर्थ से शिक्षा दी कि "लोग चकित हो गए।" परन्तु उनके चकित होने का इससे भी बड़ा कारण उस एक अभागे व्यज़्ति का चंगा होना था जिसे अशुद्ध आत्मा से ग्रस्त बताया जाता था। कफ़रनहूम में यीशु का यह पहला और दुष्टात्माओं से चंगाई का पहला लिखित आश्चर्यकर्म था। अंधकार की इन रहस्यमयी शज़्तियों पर विजय पाने के इन आश्चर्यकर्मों से अधिकतर लोग भयभीत नहीं हुए थे (*तु.* लूका 4:36, 37; 10:17)। इसके बाद उसने पतरस की सास को उसके घर में ही चंगाई दी और अलग-अलग रोगों से पीड़ित कई लोगों को सूर्य ढलने के बाद और सज़्त के अन्त में सहायता करने वाले लोगों द्वारा लाया जाने पर चंगा किया।

2. गलील की महान यात्रा (मरकुस 1:35-42)। एकांत में प्रार्थना के लिए अगली सुबह भोर होते ही निकल जाने पर, यीशु के चेले उसके पीछे चल रहे थे। भीड़ से बचते हुए, उसने गलील में पहुंचकर, राज्य के सुसमाचार का प्रचार हर जगह किया और कई रोगियों को चंगा किया। पूरा देश रोमांचित हो गया था; और पलिश्तीन के इलाके के लोग उस पर उमड़ पड़े थे (मज़ी 4:24, 25)। वहां पर होने वाले आश्चर्यकर्मों में केवल एक कोढ़ी के चंगा होने का वर्णन ही विस्तार से किया गया है।

3. झोले के मारे एक आदमी का चंगा होना-विरोध का प्रारज़्भ (मरकुस 2:1-12)। -पूरा साल या इससे अधिक समय तक लोगों में यीशु की प्रसिद्धि बढ़ती रही। परन्तु शीघ्र ही विरोध के स्वर ग्रन्थियों और फरीसियों अर्थात मनुष्यों की परज़्परा को

लागू करने वालों की ओर से उठने लगे। उनका विरोध झोले के मारे व्यज़्ति को चंगा करने के विषय में था। इसके बाद, यरूशलेम सहित हर जगह से अधिकारियों के जासूस उसके पीछे लगे रहे।

4. मज़्ी का बुलाया जाना और उसका भोज (मज़्ी 9:9-13; लूका 5:27-32)। -उच्च अधिकारियों की ठोकर का एक और कारण यीशु के इर्द-गिर्द इकट्ठे होने वाले लोगों का वर्ग था। चुंगी लेने वालों को, लालची और ज़बरदस्ती करने वाले लोग माना जाता था; और, रोमी सरकार के पिट्ठू होने के कारण यहूदी उनसे घृणा करते थे। इनमें से एक मज़्ी या लेवी यीशु का चेला बन गया और उसने अपने प्रभु के लिए एक बड़ा भोज दिया, जिसमें बहुत से चुंगी लेने वालों और पापियों को निमन्त्रित किया गया। फरीसियों की आलोचना से हमें यीशु की एक अच्छी बात मिलती है कि ''मैं धर्मियों को नहीं बल्कि पापियों को बुलाने आया हूं।''[1]

5. याईर की बेटी-साथ जोड़ा गया आश्चर्यकर्म (मरकुस 5:22-43)। -यीशु ने बीमारी, प्रकृति और दुष्टात्माओं पर अपनी सामर्थ दिखा दी थी। लेकिन मृत्यु पर सामर्थ दिखानी अभी शेष थी। मज़्ी की दावत के दौरान या बाद में बातें करते हुए, कफ़रनहूम के आराधनालय का हाकिम अपनी बेटी को जो मरने के निकट थी, बचाने की प्रार्थना लेकर आया। ऐसी पुकार को यीशु ने कभी अनसुना नहीं किया। रास्ते में ही लहू बहने वाली स्त्री को चंगाई मिली जिसे स्पष्टतया अतिरिज़्त आश्चर्यकर्म कहा जा सकता है। याईर के घर पहुंचने पर उन्हें मौत की नींद में सो रही छोटी लड़की मिलती है; परन्तु जो पाप और मृत्यु से छुड़ाने के लिए आया था उसने उस लड़की को हाथ पकड़कर ज़िंदा और स्वस्थ करके उसके माता-पिता को सौंप दिया।

6. दूसरा फसह (यूहन्ना 5:1-47)। -सुसमाचार की समानान्तर पुस्तकों में केवल एक ही फसह का उल्लेख है, वह भी तब जब यीशु को क्रूस पर चढ़ाया गया था। यदि यूहन्ना 5:1 का ''पर्व'' फसह ही है, तो यूहन्ना चार पर्वों का उल्लेख करता है। दोनों ही स्थितियों में यहां पर यीशु अपनी सेवकाई के लिए यरूशलेम में जाता है। लिखित घटना केवल बैतहसदा के कुंड में उस असहाय व्यज़्ति का चंगा होना ही है। यह सज़्त का दिन था, और यूहन्ना के पांचवें अध्याय में विस्तृत प्रवचन यहूदियों की आलोचना के कारण ही दिया गया है।

7. सज़्त के विषय में और आलोचना (मज़्ी 12:1-14)। गलील को वापस जाते हुए, सज़्त के दिन बल्लियां तोड़कर खाने और दाने निकालने के लिए यीशु के चेलों की आलोचना हुई। कफ़रनहूम में या किसी गांव को जाते समय, सज़्त के दिन एक सूखे हाथ वाले आदमी को चंगा करने के लिए यीशु की आलोचना हुई। इस अंतिम घटना में उसके शत्रु इतने आगे बढ़ गए कि उन्होंने उसकी हत्या करने की योजनाएं बना लीं, जो उनके धर्म के दिखावटी रूप के व्यर्थ होने का एक चौंकाने वाला उदाहरण है।

8. बारह चेले और पहाड़ी उपदेश (मज़्ी 5-7)। -यीशु की निजी सेवकाई जितनी सामर्थपूर्ण थी उतनी ही संक्षिप्त भी होनी थी। उसके प्रभाव को स्थायी बनाए रखने के लिए, इसके महत्वपूर्ण तथ्यों की सही और योग्य गवाहियों का होना आवश्यक था।

इस काम के लिए यीशु ने विशेष शिक्षा और निर्देश देने के लिए अपने चेलों में से बारह आदमी चुने।[2]

उसके बाद वह बात हुई जिसे सदा के लिए पहाड़ी उपदेश के रूप में जाना जाता है। यह हमारे पास यीशु का सबसे लज़्बा सार्वजनिक प्रवचन या उपदेश है। यह उसके राज्य की अद्‌भुत व्याज़्या है और इसमें सीनै पर दी गई व्यवस्था के साथ चौंकाने वाली मूल सच्चाइयों की तुलना है। यह बारह चेलों के अलावा बाद में बनने वाले चेलों, परन्तु दूर या निकट के सब लोगों के एक बड़े जनसमूह के सामने दी गई। बारह प्रेरितों का चुना जाना और पहाड़ी उपदेश यीशु की सेवकाई में एक महत्वपूर्ण मोड़ था। इस्राएल के व्यवस्था सिखाने वालों ने उसे ठुकरा दिया था; परन्तु आज तक पहाड़ की बातें, अर्थात बार-बार कहे जाने वाली ''मैं तुम से कहता हूं'' एक सार्वजनिक सूचना थी कि व्यवस्था की बातों में परिवर्तन होने वाला है।

III. तीसरा चरण-दृष्टांतों से शिक्षा देने का ढंग

1. निरन्तर परिश्रम। -यीशु ने कफ़रनहूम और इसके आस पास अपना महान मिशनरी कार्य जारी रखा। रोमी सूबेदार के सेवक को चंगा करने से (मज़ी 8:5-13) एक अन्यजाति में बड़े विश्वास का एक उदाहरण और उसके राज्य के विश्वव्यापी होने की भविष्यवाणी की झलक को समर्थन मिला। दूसरी बार उसने नाइन की विधवा के पुत्र का प्राण लौटाकर, मुर्दे को ज़िंदा किया (लूका 7:11-17)। यीशु की पूरी सेवकाई की सबसे अधिक मन को छू लेने वाली घटनाओं का सज़्बन्ध इसी समय से है। एक फरीसी के भोज में एक पश्चाज़ापी स्त्री ने अपने आंसुओं से यीशु के पांव धोकर उस पर बहुत महंगा तेल लगाया था (लूका 7:36-50)। मेहमाननवाज़ फरीसी द्वारा की गई इस आलोचना से उसके अतिथि ने दो कर्ज़दारों की एक बड़ी सुन्दर मिसाल दी थी।

2. यूहन्ना की गवाही (लूका 7:18-35)। -यूहन्ना का बंदीगृह में डाला जाना यीशु द्वारा यहूदिया को छोड़ने का एक कारण था। एक वर्ष से यूहन्ना की बाज जैसी आत्मा मृत सागर के पूर्वी छोर पर ''काले किले'' में कैद थी। उसने यीशु के बपतिस्मे के समय आकाश को खुलते देखा और परमेश्वर की आवाज़ सुनी थी। यह भी बताया था कि वही मसीह है। परन्तु यीशु वह काम नहीं कर रहा था जिसकी उज़्मीद यूहन्ना को मसीह से थी। हेरोदेस और पीलातुस और कैफा अभी भी सज़ा में थे। उसने देश को फटका ज़्यों नहीं, भूसे को जलाया ज़्यों नहीं और धार्मिकता से राज्य ज़्यों नहीं किया? शायद यही सोचकर यूहन्ना ने अपने दो चेलों को यीशु से यह पूछने के लिए भेजा कि ''ज़्या आने वाला तू ही है, या हम किसी और दूसरे की बाट देखें?'' यीशु ने उन्हें उस काम के बारे में जो वह कर रहा था बताकर वापस भेज दिया और फिर यूहन्ना की बहुत प्रशंसा की।

3. दृष्टांत से शिक्षा देने का ढंग (मज़ी 8; मरकुस 4:1-34)। -हम यीशु के दृष्टांतों के पहले बड़े समूह तक पहुंच गए हैं। दो और बड़े समूह आते हैं जिनमें से एक पिरिया में सेवकाई का है जबकि दूसरा हमारे प्रभु के सार्वजनिक कार्य के अंतिम दिन का। दृष्टांतों में शिक्षा देना चेलों के लिए एक आश्चर्य था (मज़ी 13:10)। इसकी कुंजी ग्रन्थियों तथा

फरीसियों के बढ़ते विरोध और निराशापूर्ण कपट में मिलती है। एक के बाद एक आश्चर्यकर्म होते जा रहे थे; परन्तु वे इसे दुष्टात्माओं के सरदार की सामर्थ से हुए बताते थे (मत्ती 12:22-37), और फिर उससे एक चिह्न की मांग करके उन्होंने बहुत बड़ी गुस्ताखी की थी (मत्ती 12:38-45)। यीशु ने उनके पाप को पवित्र आत्मा के विरुद्ध पाप कहकर बता दिया था कि उसकी नज़र में वह कितना बड़ा पाप था, जिसकी कोई क्षमा नहीं है। हाकिमों से झगड़े से बचने के लिए ही उसने दृष्टांतों में शिक्षा दी, जिसकी व्याख्या उसने बाद में अपने चेलों से की (मत्ती 13:10-16)। निस्संदेह इसका एक और कारण उसकी शिक्षाओं में सुन्दरता और बल डालना था। लेकिन दृष्टांतों में शिक्षा देने के ढंग का ग्रन्थियों और फरीसियों के बढ़ते विरोध से काफ़ी सम्बन्ध है।

IV. चौथा चरण-कफ़रनहूम के आराधनालय में प्रवचन तक

1. तूफ़ान को शांत करना और गदरेनियों के देश में अशुद्ध आत्मा वाला आदमी (मत्ती 8:18-34)। -यीशु के लिए दृष्टांतों का दिन बड़ा महत्वपूर्ण था। उसने दुष्टात्माओं से युद्ध किया था, शत्रुओं ने षड्यन्त्र किया था, मित्र उसे ढूंढ़ते थे और उसने अपने दिन की समाप्ति दृष्टांतों से की थी। अपने काम से थके हुए उसने छोटी झील पार करने की आज्ञा दी, जो उसका पहला लिखित पद है परन्तु अंतिम नहीं। अचानक तूफ़ान का आना, तेज़ी से बढ़ना, लापरवाही से प्रभु का सोना, समुद्र को डांटकर कहना, ''शांत रह, थम जा,''[13] और आंधी और तूफ़ान का एकदम शांत हो जाना, बड़ी ही सहजता से बताए गए हैं। हो सकता है कि एक आश्चर्यकर्म दूसरे की तरह ही लगता हो परन्तु सत्य यह है कि कुछ आश्चर्यकर्मों से, देखने वाले अवश्य ही भयभीत हो गए होंगे, जबकि दूसरों से नहीं। ''यह कैसा मनुष्य है, कि आंधी और पानी भी उसकी आज्ञा मानते हैं?''[14] पूर्वी तट पर यीशु ने एक और काम किया था जिससे लोग आश्चर्य से भर गए थे। दुष्टात्माओं से ग्रस्त दो लोग उसे मिले थे जिनमें से एक में अशुद्ध आत्माओं का लश्कर था। गदरेने के लोग इतने भयानक अशुद्ध आत्मा वाले व्यक्ति को कपड़े पहने और होश में देखकर चकित थे, लेकिन अपने सूअरों के खो जाने पर वे क्रोधित हो गए और उनकी प्रार्थना पर यीशु पश्चिमी तट की ओर समुद्र की दूसरी ओर चला गया।

2. बारह चेलों का पहला मिशन (मत्ती 9:35-11:1)। -गलील से लौटकर यीशु अपने बचपन के घर में दूसरी और अंतिम बार गया; परन्तु नासरत के लोगों ने एक बार फिर उसे ठुकरा दिया। फिर भी, उसका काम तो रुक नहीं सकता था। किसी के लिए यह बहुत बड़ी बात है, क्योंकि उन बारह चेलों के लिए प्रचार करने की कला में शिष्यता करना आवश्यक था। इस कारण उसने उन्हें गलील जाने, दो-दो करके प्रचार करने और आश्चर्यकर्म करने की आज्ञा दी। इस दौरान यीशु अपना काम करता रहा। ध्यान देने योग्य है कि यीशु और यूहन्ना के व्यक्तिगत मिशनों की तरह बारह का मिशन भी तैयारी के लिए था। यह इस्राएल के घराने की खोई हुई भेड़ों तक सीमित था और इसका बोझ ''मन फिराओ; क्योंकि स्वर्ग का राज्य निकट आ गया है''[15] था।

3. यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले की मृत्यु (मत्ती 14:1-12)। -इस सम्बन्ध में, यूहन्ना की मृत्यु, जो कुछ समय पहले हो चुकी थी, का वर्णन किया जाता है। हेरोदेस अंतिपास ने अपने जीवित भाई फिलिप्पुस की पत्नी हेरोदियास से विवाह कर लिया था। यूहन्ना ने एक राज्यपाल को उसके पापों के लिए डांटने से संकोच नहीं किया। नीच हेरोदियास ने तब तक न खुद चैन लिया न हेरोदेस को लेने दिया, जब तक उसने यूहन्ना को बंदीगृह में डलवाकर, शहीद नहीं कर दिया। जब यीशु के सामर्थ के कामों की प्रसिद्धि हेरोदेस तक पहुंची, तो उसने कहा: ''यह यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला है; वह मरे हुओं में से जी उठा है।''

4. पांच हज़ार लोगों को खिलाना और जीवन की रोटी पर संदेश (यूहन्ना 6)। -बारह चेले गलील से लौट आए, और यीशु आराम करने और उनके साथ झील के पूर्व में बिखरी हुई भीड़ से दूर एकांत में बातें करने के लिए अलग हो गया। परन्तु अभी भी भीड़ उसे सुनने के लिए उमड़ रही थी और वह उन्हें सिखा रहा था। रात होने वाली थी; लोगों के घर दूर थे और खाने के लिए उनके पास कुछ नहीं था। यीशु ने उन पर तरस खाकर रोटी और मछली के कुछ टुकड़ों से उन सबको भर पेट भोजन कराया। यह उसकी प्रसिद्धि का चरम था। भीड़ उसे राजा बनाने पर उतारू थी। यह तीसरी परीक्षा थी। परन्तु यीशु ने ऐसा मसीहा नहीं बनना था। भीड़ की बात को नकारकर उन बारह चेलों को समुद्र के पार भेजकर यीशु एकांत में पहाड़ पर जाने के लिए वहां से निकल गया। बाद में रात के समय वह तूफ़ान में से समुद्र पर चलते हुए उनके पास आया। सुसमाचार के सभी लेखकों ने पांच हज़ार लोगों को खिलाने का केवल एक ही आश्चर्यकर्म दर्ज किया है। केवल यूहन्ना ने ही कफ़रनहूम के आराधनालय में दिए गए प्रवचन को सज़्भालकर रखा है जो इसके बाद दिया गया था। वहां वह जीवन की रोटी के रूप में अपने आप पर रहता है। उत्साही भीड़ को लगता है कि वह उनकी पसन्द का मसीहा नहीं है। यदि वह उनके निकज़्मे विचारों में फंस जाता और एक सांसारिक राजा बनकर संतुष्ट हो जाता तो उसे इतनी सर्वोच्च शज़्ति तुरन्त मिल जाती। परन्तु वह *इस* लिए नहीं आया था। उसके लिए, मनुष्य के छुटकारे का मार्ग, केवल क्रूस का ढंग था।

कफ़रनहूम के आराधनालय में दिया गया यह महान प्रवचन यीशु के जीवन का एक और मोड़ है। ''इस पर उसके चेलों में से बहुतेरे उलटे फिर गए और उसके बाद उसके साथ न चले'' (यूहन्ना 6:66)। ग्रन्थी और फरीसी काफी समय से उससे घृणा करते थे; गदरेने और नासरत के लोगों ने उसे ठुकरा दिया था। हेरोदेस अंतिपास उसमें भयानक रुचि लेने लगा था और अब उसके अपने ही चेले निराश होकर उससे फिर रहे हैं अर्थात उससे दूर जा रहे थे।

V. पांचवां चरण-मण्डपों के पर्व में गलील से अंतिम विदाई तक

1. समय। -यीशु ने अपनी सेवकाई के तीसरे फसह में भाग नहीं लिया। यह फसह पांच हज़ार लोगों को भोजन खिलाने के समय ही था (यूहन्ना 6:4)। इसलिए गलील की

सेवकाई का यह पहला चरण लगभग छह माह (अप्रैल से अक्तूबर) तक चला।

2. नये पहलू। -इस काल में नये और चौंकाने वाले पहलू मिलते हैं। यह काल-

क. घूमने का काल था। -फीनीके से होते हुए, यीशु बाशान और दिकापुलिस में गया। परन्तु उसने गलील में अपना काम पूरी तरह से बंद नहीं किया।

ख. एकांत का काल था। -यीशु निरन्तर भीड़ से बचता रहा और बारह चेलों के साथ अकेला रहना चाहता था।

ग. व्यक्तिगत आज्ञा का काल था। -कुछ आश्चर्यकर्म और लोगों में शिक्षा देने की थोड़ी सी बातें लिखी गई हैं। वह अपने राज्य की मुख्य बातों में और आने वाली अपनी मृत्यु के लिए उन बारह को शिक्षित और तैयार कर रहा था (*तु.* मत्ती 16:21-23; 17:9; मरकुस 9:30-32)।

3. फीनीके में जाना (मत्ती 15:21-28)। -वह, जिसका मिशन सब देशों के सब लोगों का उद्धार करना था अपने देश से बाहर केवल एक बार ही गया। जाने की यह एकमात्र घटना केवल सूर और सैदा की एक स्त्री की बेटी को चंगाई देने की है। उसका विश्वास इतना विनम्र व दृढ़ था कि फरीसियों के कपट और गलील के लोगों की अस्थिरता के बाद उसे ताज़गी मिली होगी। सूर और सैदा से होते हुए, यीशु दिकापुलिस में गया। यहां एक बार फिर भीड़ उमड़ पड़ी और उसने आश्चर्यकर्म से चार हज़ार लोगों को खाना खिलाया। झील को पार करके वह फिर गलील में आया। ध्यान देने वाली बात यह है कि गलील की सेवकाई के इस अंतिम चरण में, जब यीशु हेरोदेस अग्रिप्पा के इलाके से बाहर दूर तक गया, तो भी उसने अपनी गतिविधियों का केन्द्र गलील को ही बनाया जहां से उसने आरम्भ किया था और जहां वह लौट आया।

4. कैसरिया फिलिप्पी में जाना; महान अंगीकार (मत्ती 16)। गलील में यीशु के लौटने पर फरीसियों ने, जिन्हें सदूकियों का समर्थन मिल गया था, अपने आक्रमण फिर तेज़ कर दिए (मत्ती 16:1-4); और यीशु ने हेरोदेस फिलिप्पुस के इलाके में जाने की तैयारी करते हुए अपने चेलों को फरीसियों और सदूकियों के "खमीर" से सावधान रहने को कहा।

अब उसकी सेवकाई का अंत निकट आ रहा है। औपचारिक ढंग से उसने कभी मसीह होने का दावा नहीं किया था। उसने अपने उन कामों के द्वारा, अपनी बातों के द्वारा और अपने जीवन से लोगों के मनों में धीरे-धीरे यह सच्चाई डालने को प्राथमिकता दी थी, परन्तु अब उन परिणामों को परखने, और शांत रूप से उनके मानने को खुले में अंगीकार करने का समय आ गया है। एकांत में प्रार्थना करने की एक अवधि के बाद, यीशु ने बारह चेलों के सामने दो प्रश्न रखे:

"लोग मनुष्य के पुत्र को क्या कहते हैं?"[6]

उनके अलग-अलग उत्तरों से पता चलता है कि लोग किस प्रकार उसे और उसके मिशन को समझने में नाकाम रहे थे।

"परन्तु तुम मुझे क्या कहते हो?"[7]

"*तू जीवते परमेश्वर का पुत्र मसीह है।*"[8]

इस अंगीकार के महत्व की अतिश्योज़्ति करना असज़्भव है। कल्पना करें कि *उन्होंने* भी सत्य को नहीं समझा।

केवल पतरस ने ही जवाब दिया था। वह भी अपने लिए ही नहीं बल्कि उन बारह की ओर से भी। फिर यीशु का काम एक असफलता *नहीं* था। वह इस छोटे समूह में अपनी भावी कलीसिया के स्रोत देखता है और उस सत्य के लिए अर्थात वास्तविक ''प्रेरितों का धर्मसार'' जिस पर यह बनना था, पतरस के अंगीकार में ही था। परन्तु अभी तक किसी ने यह नहीं बोलना था। उन्हें अपने मसीह होने की बात बता देने के बाद यीशु मसीहा होने की बातों में शामिल चीज़ों को प्रकट करता है जैसे उसका ठुकराया जाना, मृत्यु और पुनरुत्थान। पतरस को, जो अभी भी सांसारिक धारणाओं और विरोधों के बंधनों में है। हे शैतान मेरे सामने से दूर हो,[9] प्रभु की उसे तुरन्त झिड़क है; और इसके बाद वह वह सबक देता है जिसकी अभी भी बहुत अधिक आवश्यकता है कि चेला होना या इसका अर्थ, अपने आप का इन्कार करना या मुकुट पहनने से पहले क्रूस को पहनना *भी* है।

5. यीशु का रूपान्तरण (मज़ी 17:1-13)। -इस पूरे काल में यीशु अंधेरी परछाइयों में से चला। उसके पीछे, गलीलियों द्वारा उसका ठुकराया जाना; आगे क्रूस; और आस-पास विश्वासी चेलों का घेरा है और उसके ऊपर पिता का न बदलने वाला प्रेम। गलील में फिर से शत्रुओं के सामने जाने और यहूदिया में और भी कड़े विरोधियों के पास लौटने से पहले, परमेश्वर की उपस्थिति और उसके अनुमोदन का एक शानदार चिह्न उसे देना है। रूप बदलने (रूपान्तरित होने) का दृश्य कुछ चेलों के लिए था परन्तु मुज़्यत: उनके प्रभु के लिए ही था। इस दृश्य को चुने हुए तीन लोगों अर्थात पतरस, याकूब और यूहन्ना ने ही देखा था। जब वह प्रार्थना में था, तो वह मानवीय पर्दे के बीच से स्वर्गीय चमक के साथ ईश्वरीय रूप में आया। मूसा और एलिय्याह जिन्हें क्रमश: पुरानी वाचा का मध्यस्थ और महान सुधारक माना जाता था, यरूशलेम में उसकी आने वाली मृत्यु के बारे में बातें करने के लिए प्रकट हुए थे; जबकि जैसा यरदन में उसके बपतिस्मे के बाद हुआ था वैसे ही स्वर्ग से यह आवाज आई, ''यह मेरा प्रिय पुत्र है, जिससे मैं प्रसन्न हूं: इसकी सुनो।''[10] यह सचमुच एक भव्य दृश्य था। एक प्रेरित को तो यह दृश्य बहुत देर तक याद रहा (2 पतरस 1:16-18)। नबी और प्रेरित, नई और पुरानी वाचा, स्वर्ग और पृथ्वी वहीं मिले थे। यीशु के लिए यह एक फलहीन सेवकाई परन्तु पिता की स्वीकृति की मुहर थी, और यह आश्वासन था कि वह अंत तक उसके साथ रहेगा। चेलों के लिए इसका अर्थ यह था कि जो अंगीकार उन्होंने किया था वह न तो उनकी गलती थी और न ही उनका गलत भरोसा; इसके बाद उनके लिए जिसकी बात सुननी और जिसका प्रचार करना आवश्यक था वह मूसा नहीं बल्कि मसीह था। परन्तु एक बार फिर अस्थाई शांति की मुहर उनके होंठों पर लग गई। उस दर्शन का पूरा भाग पुनरुत्थान और स्वर्गारोहण के प्रकाश में ही देखा जा सकता है। दर्शन वाले उस पर्वत से उतरते हुए, यीशु मिरगी वाले एक दुष्टात्मा ग्रस्त व्यज़्ति को चंगा करता है और कफ़रनहूम में लौट आता है, अभी भी वह चेलों को यरूशलेम आने वाली महाविपज़ि के लिए तैयार कर रहा है।

6. गलील की सेवकाई का अन्त। यीशु गलील में अधिक देर तक नहीं रहा। वहां

उसका महान काम पूरा हो चुका था। भीड़ से बचते हुए, केवल कुछ आश्चर्यकर्म करके उसने अपने राज्य की आत्मिकता के विषय में अपने चेलों को दृढ़ और प्रभावित करते हुए, और इसमें प्रवेश करने के लिए उन्हें बच्चों की तरह छोटे होने की आवश्यकता बताते हुए काम किया (मत्ती 18:1-14)। मण्डपों का प्रसिद्ध पर्व अब आने वाला था, और सामरिया से होते हुए, यह छोटी मंडली, एक बार फिर यरूशलेम को चली गई।

पाद टिप्पणियां

[1]मत्ती 9:13; मरकुस 2:17; लूका 5:32. [2]सुसमाचार की चारों पुस्तकों में प्रेरितों के नाम की सूचियां इस प्रकार हैं:

मत्ती 10:2-4	**मरकुस 3:16-19**	**लूका 6:14-16**	**प्रेरितों 1:13**
शमौन पतरस	शमौन पतरस	शमौन पतरस	शमौन पतरस
अंद्रियास	याकूब	अंद्रियास	याकूब
याकूब	यूहन्ना	याकूब	यूहन्ना
यूहन्ना	अंद्रियास	यूहन्ना	अंद्रियास
फिलिप्पुस	फिलिप्पुस	फिलिप्पुस	फिलिप्पुस
बरतुलमाई	बरतुलमाई	बरतुलमाई	थोमा
थोमा	मत्ती	मत्ती	बरतुलमाई
मत्ती	थोमा	थोमा	मत्ती
हलफई का पुत्र याकूब	हलफई का पुत्र याकूब	हलफई का पुत्र याकूब	हलफई का पुत्र याकूब
तद्दै	तद्दै	शमौन जेलोतेस	शमौन जेलोतेस
शमौन कनानी	शमौन कनानी	याकूब का पुत्र यहूदा	याकूब का भाई यहूदा
यहूदा इस्करियोती	यहूदा इस्करियोती	यहूदा इस्करियोती	------

ध्यान दें: (1) इनके तीन समूह हैं: (2) हर सूची में पतरस पहला, फिलिप्पुस दूसरा और हल्फै (या हलफई) का पुत्र याकूब तीसरा है (3) ''जेलोतेस'' आरामी भाषा के शब्द ''कनानियन'' के लिए यूनानी शब्द है। (4) सब सूचियों में यहूदा इस्करियोती का नाम अन्त में है (5) तद्दै सम्भवत: याकूब का भाई यहूदा ही है।

[3]मरकुस 4:39; मत्ती 8:26; लूका 8:24 भी देखिए। [4]मत्ती 8:27; मरकुस 4:41; लूका 8:25 भी देखिए। [5]मत्ती 3:2; 4:17; मरकुस 1:14ख, 15 भी देखिए। [6]मत्ती 16:13; मरकुस 8:27; लूका 9:18 भी देखिए। [7]मत्ती 16:15; मरकुस 8:29; लूका 9:20. [8]मत्ती 16:16; मरकुस 8:29; लूका 9:20 भी देखिए। [9]मत्ती 16:23; मरकुस 8:33. [10]मत्ती 17:5; मरकुस 9:7; लूका 9:35 भी देखिए।